20 / 09 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सर्व गुणों केसागर व शक्तियों को स्वयं में भरने का अनुभव

➢➢ सर्व गुणों के सागर

➳_➳ भृकुटी तख्त पर विराजमान मैं आत्मा मास्टर सर्व गुणों का सागर हूँ

→ मैं एक चमकता हुआ सितारा हु

- सम्पूर्ण शांत
- शांति मुझ आत्मा का स्वधर्म है
- वातावरण में भी सम्पूर्ण शांति है
  - मैं आत्मा अपने निज स्वरुप पर स्वयं को केन्द्रित करती हु

→ मैं एक ज्योतिर्मय आत्मा हु

- सम्पूर्ण शरीर शिथिल
- शरीर की सारी हलचल समाप्त

→ देह के भव्य भाल पर विराजमान

→ मैं एक चैतन्य ज्योति हु

- एक तेजोमय आत्मा हु
  - मुझ आत्मा से सम्पूर्ण शरीर में
  - शांति की किरणें फ़ैल रही है

→ मेरे अंग अंग से चहु और शांति के प्रकम्पन फ़ैल रहे है

→ सम्पूर्ण वातावरण में शांति ही शांति है

- मन शांत
- बुध्धि एकाग्र
- सारी हलचल समाप्त
  - मैं एक तेजस्वी आत्मा हु

→ शरीर के भान से परे

→ इस संसार की सारी स्मृतियों से परे

- मैं एक प्रकाशपुंज हु

→ बाप समान सर्व गुणों का सागर हूँ

- मैं आत्मा अब स्वयं में सागर की दो विशेष शक्तिया धारण करने का पुरुषार्थ कर रही हूँ
  - 1. समाने की शक्ति
  - 2. सामना करने की शक्ति

→ जितना जितना मैं आत्मा हर लहर रूपी परिस्थिति को अपने अंदर समाती हूँ

■ उतना ही हर व्यक्ति व् वस्तु को भी स्वयं में समा लेती हूँ

 सर्व गुणों के सागर बाप से अब मैं आत्मा स्वयं में सर्व शक्ति भरने का अनुभव कर रही हूँ

➢➢ **ज्ञान**

➳_➳ मैं आत्मा ज्ञान स्वरुप हूँ

→ शरीर एकदम स्थिर

→ हाथ RELAX

→ पैर RELAX

■ आंखे खुली भृकुटी के मध्य में बिराजमान एक चमकता हिरा

· प्रकाशपुंज, सम्पूर्ण आत्मअभिमानी स्थिति

· शरीर जैसे की है ही नहीं

→ शरीर की सारी हलचल एकदम समाप्त

■ 5 तत्व 5 तत्वों में समा गया

· शरीर लोप हो गया है

· केवल मैं मस्तकमणि चमक रही

· केवल हिरा चमक रहा है

→ ज्ञान सूर्य की संतान मैं आत्मा मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ

■ मुझ आत्मा से दूर दूर तक ज्ञान की किरणें फ़ैल रही है

· मेरे सन्मुख जो आत्माये बैठी हुई है

· उसे मैं देख रही हूँ

→ भृकुटी के मध्य में चमकता हुआ सितारा

■ आंखे खुली ध्यान सारा मस्तक मणि पर

· शरीर जैसे है ही नहीं

· सम्पूर्ण वातावरण में ज्ञान की किरणें फ़ैल रही है

→ सन्मुख खड़ी आत्माये भी मेरे ही समान

■ चमकता हुआ सितारा मास्टर ज्ञान सूर्य है

· ज्ञान की अथाह सम्पदा

· ज्ञान के अथाह खजाने का अनुभव

→ मुझ आत्मा से ज्ञान की धाराये, ज्ञान का प्रकाश

■ संसार से अंधकार दूर कर रहा है

· सम्पूर्ण मौन में अव्यक्त स्थिति में स्थित

· आत्मिक द्रष्टि और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है

➢➢ **पवित्रता**

➳_➳ पवित्रता के सागर की संतान मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ

→ पवित्रता की अनंत किरणें मुजमे समा रही है

- मुझ आत्मा से सम्पूर्ण प्रकृति में पवित्रता की किरणें जा रही है
  - सन्मुख बैठी आत्मा चमकता हुआ सितारा
  - मेरे समान ही सम्पूर्ण पवित्र है

→ सम्पूर्ण वायुमंडल में पवित्रता फ़ैल रही है

- पवित्रता का अनुभव हो रहा है
  - मैं आत्मा बाल ब्रह्मचारिणी परम पवित्र हूँ

➢➢ **सुख**

➳_➳ सुख के सागर की संतान मैं सुख स्वरुप आत्मा हूँ

→ सुख कर्ता हु दुःख हर्ता हूँ

- मैं आत्मा सम्पूर्ण सुख से भरपूर हूँ
  - अत्यंत सुख स्वरुप हूँ

→ मुझ आत्मा से सारे संसार में

- सुखो की किरणें फ़ैल रही है
  - केवल मस्तक मणि पर ध्यान
  - सारी श्रुष्टि ही सुखमई हो गई है

➢➢ **शांति**

➳_➳ शांति के सागर की संतान मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ

→ शांति कुंड हूँ

- शांति का फरिश्ता हूँ
  - शांति का MESSENGER हूँ

→ मन शांत हो गया है

- सारे विचार शांत हो गया है
  - मस्तक मणि के सन्मुख बैठी हुई आत्माये

→ मेरे ही समान सम्पूर्ण शांत है

- आंखे खुली और वायुमंडल में शांति की किरणें फ़ैल रही है
  - सम्पूर्ण सेवाकेंद्र शांतिकुंड बन गया है

→ और यहा से सारे विश्व में शांति की किरणें फ़ैल रही है

- मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ

➢➢ **प्रेम**

➳_➳ प्रेम के सागर की संतान मैं आत्मा प्रेम से परिपूर्ण

→ मैं प्रेम स्वरुप आत्मा हूँ

- प्रेम मेरा श्रृंगार है
  - संसार की हर आत्मा के प्रति प्रेम

→ सन्मुख बैठी आत्माये भी मेरे ही समान प्रेम स्वरुप है

- चारो और प्रेम की किरणें फ़ैल रही है
  - जैसे की प्रेम की बाढ़ आ गई हो

→ संसार की हर आत्मा के मन में ईश्वरीय प्रेम उत्पन हो रहा है

- प्रेम की यह किरणें दूर दूर तक फ़ैल रही है
  - सारी श्रुष्टि प्रेममई हो गई है
  - मैं प्रेम स्वरुप आत्मा हूँ

➢➢ **आनंद**

➳_➳ आनंद के सागर शिव बाबा की संतान मैं आनंद स्वरुप आत्मा हूँ

→ सत चित आनंद स्वरुप हूँ

- मेरा स्वरुप सत है, चित है, आनंद है
  - आनंद कि गंगा मुझ आत्मा के अंदर बह रही है

→ जीवन आनंद से भर गया है

- सन्मुख बैठी यह आत्मा भी मेरे ही समान
  - आनंद मग्न अवस्था में है

→ चहु और आनंद ही आनंद

- आनंद का समुद्र लहरा रहा है
  - सारे संसार में आनंद ही आनंद छा गया

→ सारे संसार से दुःख गम समाप्त हो गये

- मैं आनंद स्वरुप आत्मा हूँ

➢➢ **शक्ति**

➳_➳ सर्वशक्तिमान शिव बाबा की संतान मैं शिव शक्ति हूँ

→ शक्ति स्वरुप आत्मा हूँ

- अथाह शक्तियों का भण्डार मुजमे समाया हुआ है
  - मैं शिव शक्ति स्वरुप में स्थित हूँ

→ सन्मुख खड़ी आत्माये भी मेरे ही समान अत्यंत शक्तिशाली है

- शिव की ही शक्ति है
  - शक्ति की किरणें मुझ आत्मा से चहु और फ़ैल रही है
  - मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ